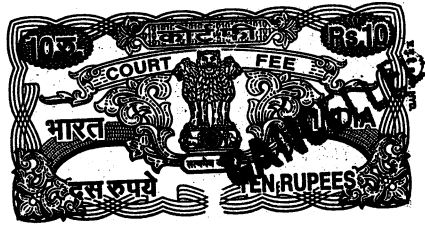


15

न्यायालय, श्रीमन् राजस्व मंडल, ग्वालियर मध्य प्रदेश ।

Ri-197
17-10-12



क्रमांक 3077
रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा आज
दिनांक 17-10-12 को प्राप्त
क
श्रीमन् राजस्व मंडल न.प्र. ग्वालियर

R.3592-II/12

देववती पुत्री सीताराम बा मूष,

निवासी ग्राम विषारपुर, तहसील कोतमा,

जिला अनूपपुर म.प्र.०

आवेदिका

// बनाम //

अनावेदक

मध्य प्रदेश शासन --

निगरानी, विरुद्ध निर्णय न्यायालय तहसीलदार
कोतमा, जिला अनूपपुर म.प्र.०, र.ट.०.०.० 26/अ-12,
20.10-2011, आदेश दिनांक- 20/07/2011

निगरानी, अन्तर्गत धारा-50 म.प्र.० र.ट.०.०.० 1959ई

मान्यवर,

आवेदिका, निम्नलिखित कारणों से, निगरानी प्रस्तुत कर,

निवेदन करती है :-

- 1- यह कि, अधीनस्थ न्यायालय का आदेश कानूनन एवं वाक्यात्मक गलत है ।
- 2- यह कि, अधीनस्थ न्यायालय ने इस बिन्दु पर गौर नहीं किया कि, आवेदिका ने, अपने पट्टे एवं स्वामित्व तथा कब्जे दखल की आर ग्राम लामा टोला, तहसील कोतमा, जिला- अनूपपुर म.प्र.० आराजी अ क्रमांक 33/8, रकबा 0-809हे०, 69/2 रकबा 0-263हे०, 77/1 रव 0-243हे०, 86/1 रकबा 0-283हे०, 87/1 रकबा 0-125हे०, 695/ रकबा 0-231हे०, कुल कितता 6, के बटाकन किये जाने हेतु आवेदन पत्र अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत की थी।

(Signature)

//2//

कार्यालय कलेक्टर शहडोल(म.प्र.)
28 SEP 2012
श्रीमन् राजस्व मंडल न.प्र. ग्वालियर
अधीक्षक

राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश ग्वालियर

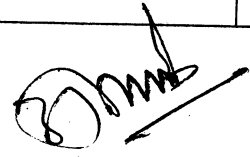
देववती/शासन

प्रकरण क्रमांक निग0 3592-दो/12

जिला -अनूपपुर

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
21/4/16	<p>आवेदिका द्वारा यह निगरानी तहसीलदार कोतमा जिला अनूपपुर के प्रकरण क्रमांक 26/अ-12/2010-11 आदेश दिनांक 20-07-2011 से असंतुष्ट होकर इस न्यायालय में प्रस्तुत की है ।</p> <p>प्रकरण का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि आवेदिका द्वारा अपने भूमि स्वामित्व की भूमि का बटांकन हेतु आवेदन प्रस्तुत किया था । तहसीलदार ने राजस्व निरीक्षक को नक्शा तरमीम करने का आदेश दिया, जिसमें खसरा नं0 33/8 में जहां आवेदिका का कब्जा था, वहां खसरा नं0 33/1 (क) दिया जबकि खसरा नं0 33/1 (क) की तरमीम हेतु कोई आवेदन पत्र आवेदक ने तहसीलदार को नहीं दिया था । आवेदिका ने 33/8 रकवा 0.809 है0 का बटा न0 कायमी हेतु आदेश जारी करने का निवेदन किया ।</p> <p>प्रकरण का अवलोकन किया तथा आवेदिका अभिभाषक के तर्क सुने आवेदिका के द्वारा आवेदन में बटांकन तथा नक्शा तरमीम त्रुटिपूर्ण करने के आदेश के विरुद्ध निगरानी की है । जबकि उसके द्वारा तहसीलदार कोतमा के आदेश दिनांक 20-07-2011 के आदेश की सत्यापित प्रति प्रस्तुत की है । जिसका आवेदिका द्वारा दिनांक 21-05-2010 को सीमांकन हेतु प्रस्तुत किये गये, आवेदन पर सीमांकन पश्चात् सीमांकन प्रतिवेदन के आधार पर तहसीलदार द्वारा सीमांकन की पुष्टि की है । जबकि निगरानी आवेदन में</p>	

01



सीमांकन की प्रक्रिया त्रुटिपूर्ण होने के विरुद्ध कोई उल्लेख नहीं किया है । यदि आवेदिका तहसीलदार द्वारा किए गए नक्शा तरमीम के आदेश से असन्तुष्ट थी, तो उसके विरुद्ध सक्षमधिकारी के समक्ष अपील आवेदन प्रस्तुत करना चाहिए था । अतः उक्त स्थिति में निगरानी ग्राह्य करने को कोई औचित्य नहीं होने से निगरानी अग्राह्य की जाती है ।




सदस्य